ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं से मनुष्यों में होने वाले मुख्य पशु जनित रोग(Zoonotic Disease): कारण एवं बचाव

डॉ. संजय कुमार मिश्र[1] एवं डॉ. राकेश कुमार[2]

[1]पशु चिकित्सा अधिकारी चोमूहां मथुरा उत्तर प्रदेश
[2]पशु चिकित्सा अधिकारी बाराबंकी उत्तर प्रदेश

मुख्य पशु जनित रोगों के कारण एवं निवारण के बारे में संपूर्ण जानकारी निम्न प्रकार है।

1.गलेंडरस एवं फारसी रोग:

इस रोग के लक्षणों में तेज बुखार व धसका अर्थात खांसी होना एवं नाक के अंदर छाले और घाव दिखना। नाक से पीला श्राव आना और सांस लेने में परेशानी होना। पैरों , जोड़ो, अंडकोष एवं सबमैक्सिलेरी ग्रंथि में सूजन होना।

रोग फैलने का कारण-

बीमार पशु के साथ रहने एवं चारा पानी एक साथ होने से।

बीमार पशु के मुंह और नाक से निकलने वाले श्राव से।मनुष्यों में इस रोग के जीवाणु प्रभावित पशुओं के नाक के स्राव के संपर्क में आने से फैलते हैं।मनुष्य में इस रोग से ग्रसित होने पर त्वचा पर घाव एवं घातक न्यूमोनिया हो जाता है।

रोग से बचाव-

रोग के लक्षण मिलने पर तत्काल पशु चिकित्सक से संपर्क करें।बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना एवं चारा पानी भी अलग रखें।अन्य पशु व मनुष्यों में यह बीमारी ना प्रसारित हो इसके लिए बीमार पशु को मनुष्य से अलग रखना चाहिए। बीमार पशुओं को पशु मेला एवं पशु बाजार आदि स्थानों पर न ले जाएं।

2. क्षयरोग/ ट्यूबरकुलोसिस-

लक्षण-

लंबे समय तक खांसी एवं सांस लेने में कठिनाई।भूख में कमी व हल्का बुखार लगभग 102 से 103 डिग्री फॉरेनहाइट हो सकता है।कभी-कभी थनैला रोग की समस्या भी पाई जा सकती है।

रोग फैलने का कारण-

बीमार पशु एवं अन्य स्वस्थ पशुओं का चारा पानी एक साथ होने पर। इस रोग से ग्रसित पशुओं की स्वास एवं कच्चा दूध का सेवन करने से फैलती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

रोग से बचाव-

रोग के लक्षण मिलने पर तत्काल पशु चिकित्सक से संपर्क करें।बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना व चारा पानी अलग रखना। यह स्वसन तंत्र का एक संक्रामक रोग है परंतु उपचार से पूर्णतया ठीक हो सकता है हालांकि इसका उपचार लंबे समय तक चलता है। पशुओं की समय-समय पर ट्यूबरक्युलिन टेस्ट द्वारा क्षय रोग की जांच कराएं। बीमार पशुओं को पशु मेला एवं पशु हाट आदि स्थानों पर न ले जाएं। बीमारी से बचने के लिए दूध हमेशा अच्छी तरह उबालकर प्रयोग करें।

3.संक्रामक गर्भपात/ब्रूसेलोसिस-

लक्षण-

तेज बुखार होना । पशु का वजन अचानक कम होना।

प्रभावित पशुओं में गर्भावस्था के अंतिम त्रैमास में गर्भपात हो जाता है एवं आगे की बयात में गर्भ न रुकना मुख्य समस्या होती है।

रोग के प्रसारण का कारण-

रोग के लक्षण मिलने पर तत्काल पशु चिकित्सक से संपर्क करें। 4 से 9 माह की बछिया/पडिया के कॉटन स्ट्रेन 19 टीकाकरण से इस बीमारी से बचा जा सकता है। गर्भपात वाले पशुओं से महिलाओं एवं बच्चों को दूर रखें।प्रभावित पशुओं का दूध खूब उबालकर प्रयोग करें।गर्भपात शिशु एवं अवयवों को गहरा गड्ढा खोदकर मिट्टी में दबाना चाहिए।

4.रेबीज /हाइड्रोफोबिया-

लक्षण-

तेज बुखार व पशुओं के मुंह से झाग दार लार आना।यह अत्यंत घातक एवं ला इलाज बीमारी है जिसका पूरे विश्व में कोई उपचार नहीं है। मनुष्य में यह रोग किसी गर्म खून वाले रेबीज प्रभावित पशु के काटने से हो सकता है।

बचाव-

- रोग के लक्षण मिलने पर तत्काल पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- कुत्ता काटने पर 24 घंटे के अंदर रेबीज का टीकाकरण ही एकमात्र उपाय है।
- कुत्तों को रेबीज का टीका प्रतिवर्ष अवश्य लगवाएं।